W1G3L3

3 समझदार नन्ही

इस कहानी में व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में भलाई करने का अपना स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिए, यह बात प्रस्तुत की गई है। हमारे समाज में कुछ लोगों का स्वभाव बुरा हो सकता है, लेकिन हमें अपना अच्छा स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिए।

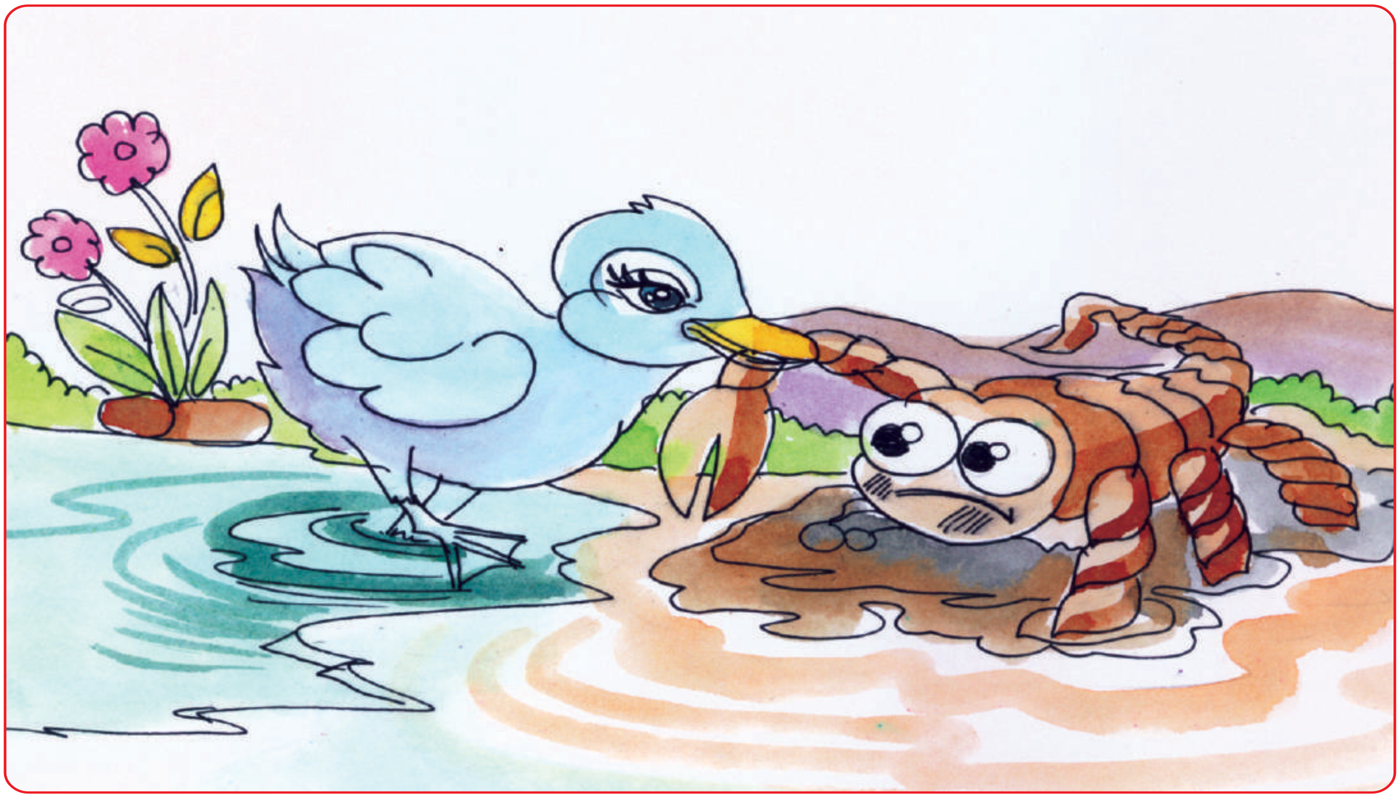

नन्ही बतख तट पर आई तो उसने देखा कि एक बिच्छू दलदल में फँसा है।

बिच्छू ने नन्ही से प्रार्थना की, ''बहन, मुझे बचा लो।'' नन्ही को उस पर दया आ गई। उसने बिच्छू को दलदल से उठाकर सूखे स्थान पर रख दिया।

बिच्छू को शैतानी सूझी। उसने नन्ही को डंक मार दिया। नन्ही पीड़ा से तड़प उठी। उसने बिच्छू से पूछा, ''क्यों भाई तुमने मुझे डंक क्यों मारा?'' बिच्छू लापरवाही से बोला, ''क्या करूँ ! डंक मारना मेरा स्वभाव है।''

नन्ही बोली, ''तुम यह गंदी आदत छोड़ दो, नहीं तो कोई मुसीबत में तुम्हारी रक्षा नहीं करेगा।''

बिच्छू उसकी बात अनसुनी कर आगे बढ़ गया। नन्ही अपनी माँ के पास नदी में चली गई। माँ ने पूछा, ''नन्ही बेटी तुम कहाँ रह गई थी?''

नन्ही बोली, ''माँ, एक बिच्छू दलदल में फँस गया था,उसे बचाने में देर हो गई।''

माँ खुश होकर बोली, ''बेटी ! यह तुमने बहुत अच्छा काम किया है।''

नन्ही बोली : ''लेकिन बदले में उसने मुझे डंक मार दिया।''

माँ बोली, ''बिच्छू अपनी गंदी आदत का गुलाम है। तुम उसे चाहे कितनी बार बचाओ वह बार-बार डंक मारता रहेगा।''

नन्ही बोली, ''माँ, मैं उसकी गंदी आदत छुड़ाकर रहूँगी।''

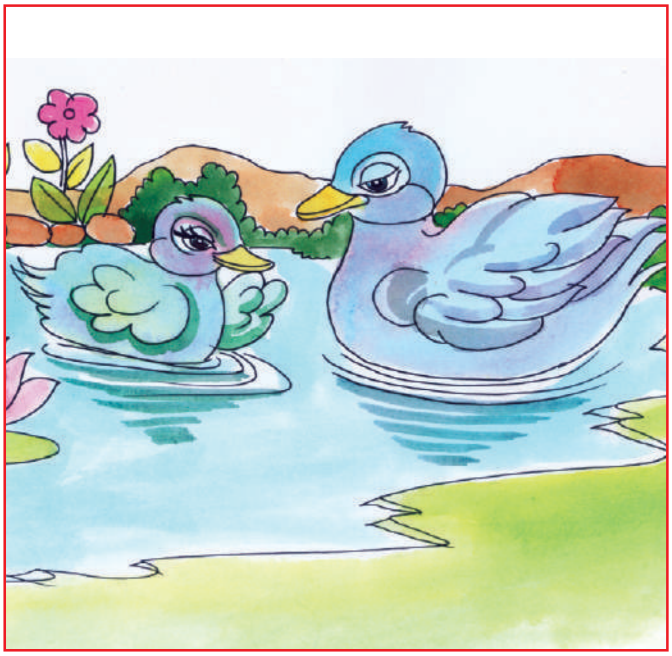

कुछ दिन बाद बिच्छू के प्राण पुन: संकट में पड़ गए। इस बार वह पानी की धारा में जा गिरा और डूबने-उतराने लगा।

मौत सामने देखकर बिच्छू को नन्ही की याद आई। वह नन्ही को पुकारने लगा। नन्ही ने उसकी करुण पुकार सुन ली। वह झपटकर बिच्छू के पास आ गई। सहसा ही उसके मन में विचार आया, ''अब मैं इस गंदे स्वभाववाले बिच्छू को नहीं बचाऊँगी।''

बिच्छू गिड़गिड़ाने लगा, ''बहन ! मुझ पर दया करो'' नन्ही का मन डोल गया। उसने सोचा, हो सकता है इसने अपनी गंदी आदत छोड़ दी हो।

नन्ही ने बिच्छू को दोबारा जीवन-दान दिया। बिच्छू अपने स्वभाव के अनुसार उसे डंक मारने के लिए आगे बढ़ा।

नन्ही उसका इरादा समझ गई। वह मुस्काराकर बोली, ''बिच्छू भाई ठिठक क्यों गये ? डंक मारो।''

बिच्छू शर्म से पानी-पानी हो गया। वह खिसियाकर बोला, ''बहन, एक बात बताओ,मैंने सदा तुम्हारे साथ विश्वासघात किया, फिर भी तुमने मेरे साथ भलाई ही की, ऐसा क्यों ?''

नन्ही बोली, ''भलाई करना मेरा स्वभाव है। मैं तुमसे बदला लेने के लिए अपनी अच्छी आदत क्यों छोड़ दूँ ? मेरा काम बचाना है, मैं मुसीबत में पड़े को बार-बार बचाती रहूँगी। तुम्हारा काम डंक मारना है, तुम मारते रहो। देखती हूँ कौन जीतता है ?''

बिच्छू पछतावे से भर गया, बोला, ''नन्ही बहन ! आज तुम जीत गई। मैं वचन देता हूँ कि अब मैं किसी निर्दोष जीव को डंक नहीं मारूँगा।''

नन्ही खुश होकर नदी में चल दी। माँ ने आज फिर पूछा, ''बेटी कहाँ देर कर दी ?''नन्ही ने पूरी घटना बता दी।

माँ प्यार से बोली, ''प्यारी, समझदार नन्ही ! भले लोग अपनी बार-बार की भलाई से इसी तरह बुरे लोगों को भला बनने की राह दिखाते हैं।''

नन्ही प्रसन्न होकर थिरकने लगी।

- शंकर सुल्तानपुरी

शब्दार्थ

तट किनारा **स्वभाव** प्रकृति **सहसा** एकाएक **खिसियाकर** लज्जित होकर **निर्दोष** बेकसूर, दोष रहित **राह** रास्ता **प्रसन्न** खुश **दलदल** गीली जमीन जिसमें खड़े होने पर पाँव धँसता चला जाय

मुहावरे

अनसुनी करना ध्यान न देना **आदत का गुलाम होना** आदत से मजबूर होना **वचन देना** वादा करना **मन डोलना** विचार बदलना **जीवनदान देना** नया जीवन देना **शर्म से पानी-पानी होना** बहुत लज्जित होना **थिरकने लगना** खुशी से नाचने लगना

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहा और क्यों ? बताइए :

(1) ''माँ, मैं उसकी गंदी आदत छुड़ाकर रहूँगी।''

(2) ''क्या करूँ ! डंक मारना मेरा स्वभाव है।''

(3) ''तुम यह गंदी आदत छोड़ दो, नहीं तो मुसीबत में कोई तुम्हारी मदद नहीं करेगा।''

(4) ''भलाई करना मेरा स्वभाव है।''

(5) ''मैं वचन देता हूँ कि अब मैं किसी निर्दोष जीव को डंक नहीं मारूँगा।''

2. यदि तुम नन्ही की जगह होते तो बिच्छू के साथ कैसा बर्ताव करते ? सोचकर कहिए :

B5B1Z2

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) नन्ही कौन थी ?

(2) बिच्छू कहाँ फँस गया था ?

(3) बिच्छू को क्यों पछतावा हुआ ?

(4) नन्ही ने क्या निश्चय किया ?

(5) नन्ही ने बिच्छू को क्यों बचाया ?

(6) बिच्छू के स्वाभाव के बारे में माँ ने नन्ही से क्या कहा?

(7) नन्ही ने अपने स्वभाव के बारे में क्या कहा ?

2. घटनाओं को उनके सही क्रम में लिखिए :

☐ (अ) नन्ही बिच्छू की आवाज सुनकर दौड़ती आ गई।

☐ (ब) नन्ही अपनी माँ के पास चली गई।

☐ (क) नन्ही ने बिच्छू को दलदल से निकालकर सूखे स्थान पर रख दिया।

☐ (ड) नन्ही ने बिच्छू को दलदल में फँसा हुआ देखा।

☐ (इ) बिच्छू ने नन्ही को डंक मार दिया।

3. इकाई में से पाँच संज्ञा शब्द ढूँढ़िए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

उदाहरण : बिच्छू : **बिच्छू** दलदल में फँस गया था।

4. इकाई में प्रयुक्त मुहावरों में से किन्ही तीन मुहावरों को रेखांकित कीजिए और उनका अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द खोजकर उनका वाक्य में प्रयोग करके लिखिए :

उदाहरण : नदी – सरिता (नर्मदा गुजरात की सबसे बड़ी सरिता है।)

(1) स्थान (2) स्वभाव (3) मुसीबत

(4) प्रसन्न (5) थिरकना

6. **निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश के क्रम में लिखिए :**

(1) बिच्छू (2) नदी (3) शैतानी

(4) डंक (5) मुसीबत

7. **नीचे दिए गए चित्रों को देखकर दो-दो वाक्य लिखिए और कहानी बनाइए :**

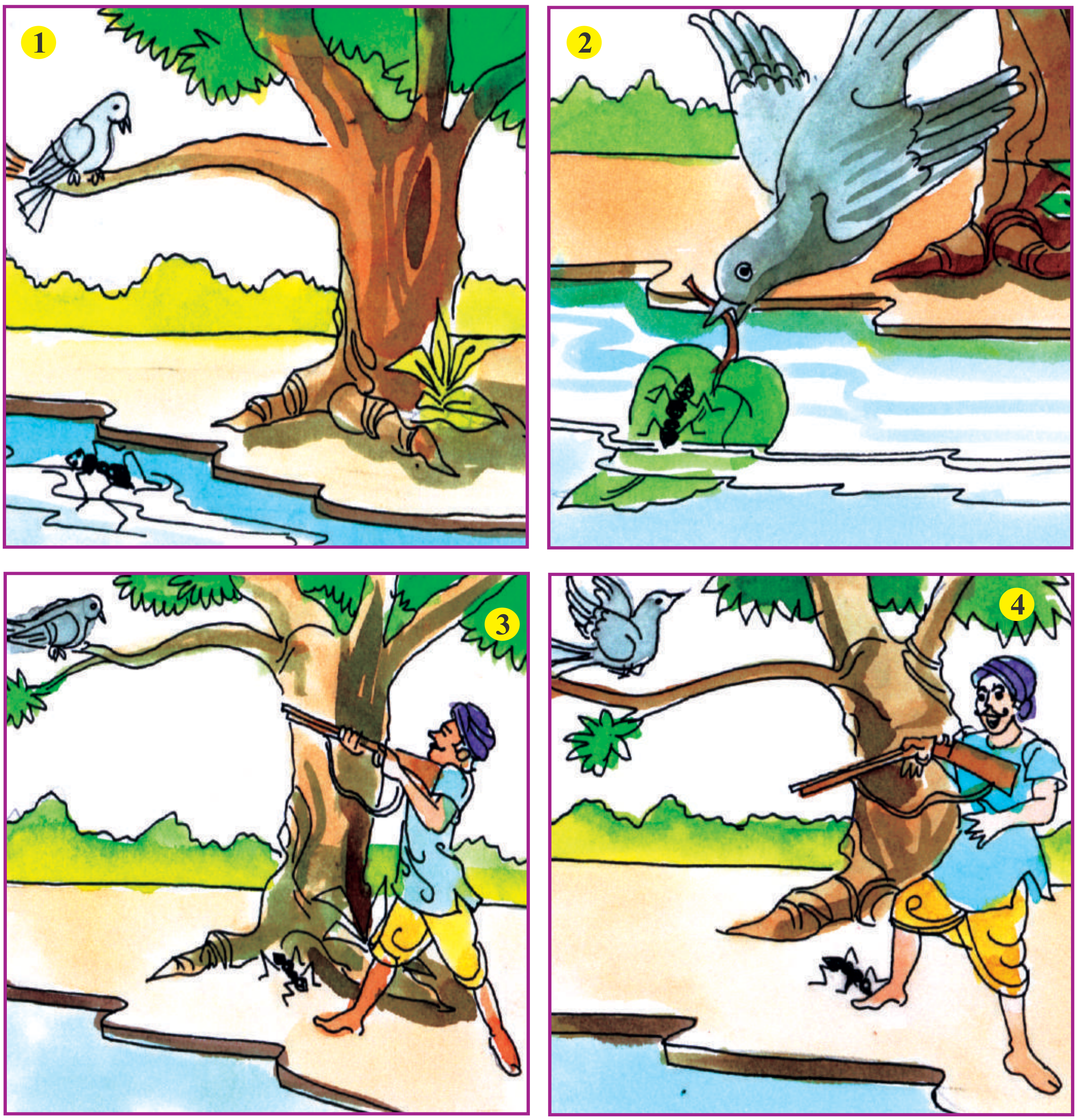

8. नीचे दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि इसके बाद क्या-क्या हुआ होगा ?

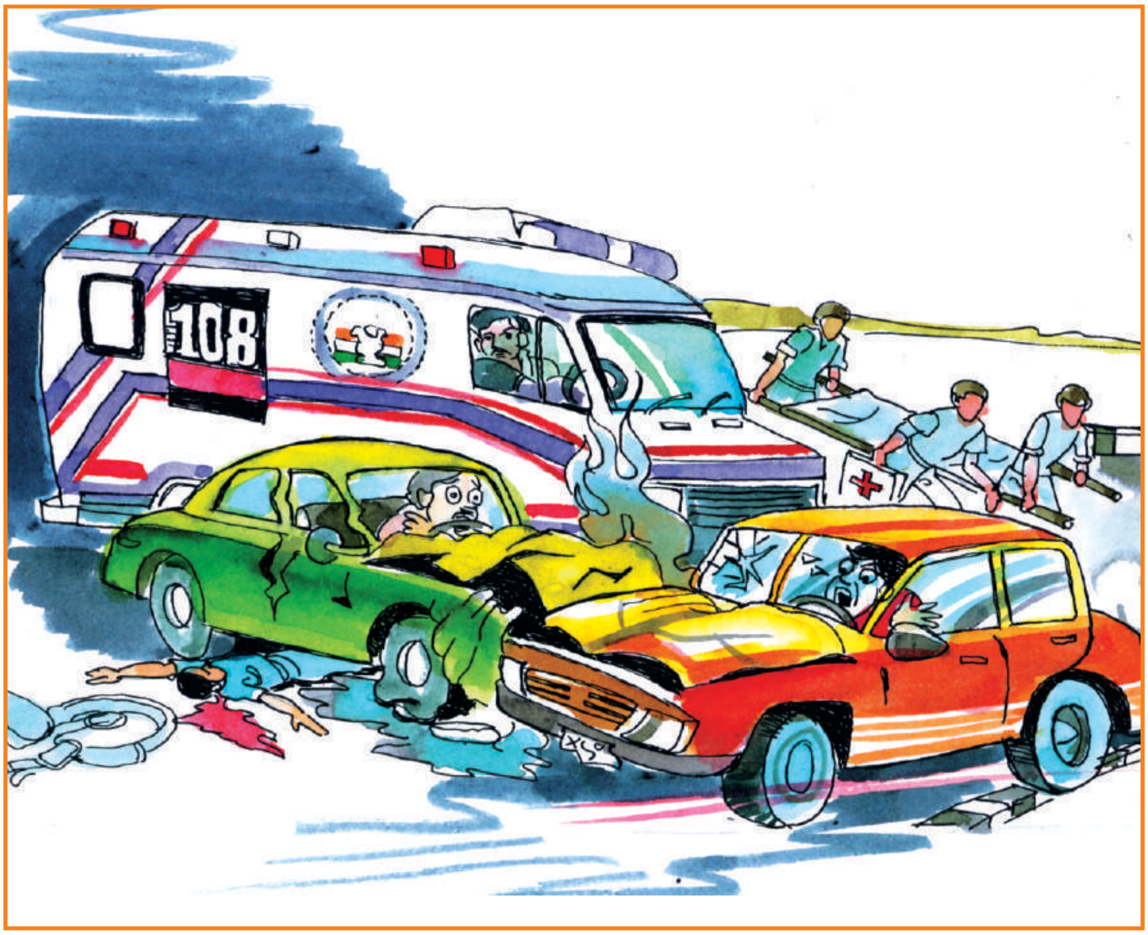

9. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्न का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

(1) बिच्छू बोला नन्ही बहन आज तुम जीत गई

(2) क्यों भाई तुमने मुझे डंक क्यों मारा

(3) बिच्छूभाई ठिठक क्यों गए डंक मारो

(4) भलाई करना मेरा स्वभाव है

(5) बहन मुझे बचा लो

10. निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

देवताओं का अभिवादन स्वीकार करने के पश्चात ब्रह्माजी ने उनसे कुशल मंगल पूछा। इस पर इन्द्र बोले, ''पितामह हम वृत्रासुर से त्रस्त हैं। अपनी प्राण रक्षा करना हमारे लिए कठिन हो रहा है। असुर न केवल हमसे अधिक बलवान हैं अपितु चतुर भी अधिक हैं। हम एक शस्त्र बनाते हैं तो वे चार बना लेते हैं। हम उनसे पार नहीं पा सकते। कृपा कर वृत्रासुर के विनाश का कोई उपाय बताइए।''

(1) असुरों के बारे में इन्द्र ने क्या कहा?

(2) देवता ब्रह्माजी के पास क्यों गये ?

11. नीचे दिए हुए वर्णों से पाँच-पाँच शब्द बनाइए :

भ, व, र, न, ग

भाषा-सज्जता

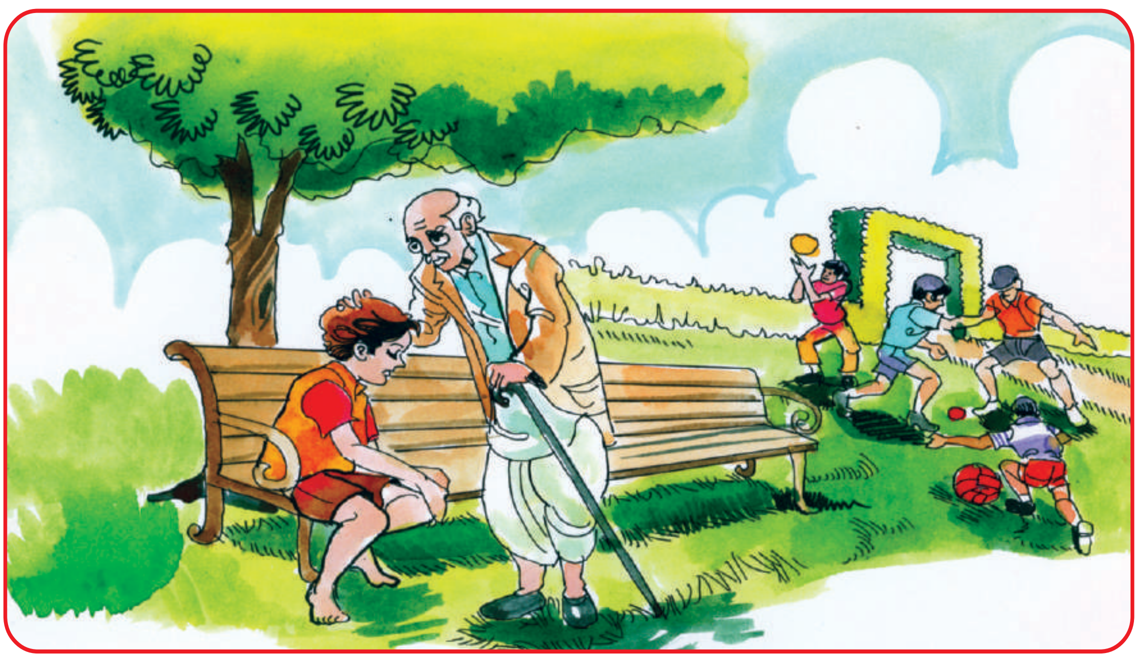

चाचा : ''रामू, ओ रामू ! चुपचाप क्यों बैठे हो ? खेलोगे नहीं ?''

रामू : ''नहीं, मेरा मन खेलने में नहीं लगता **मैं** बड़ा कलाकार बनना चाहता हूँ।''

चाचा : ''अरे हाँ ! **तुम** तो चित्रकारी सीख रहे थे ना।''

रामू : "हाँ ! लेकिन **वह** काम मुझे पसंद नहीं आया।"

चाचा : "क्यों, क्यों ?"

रामू : "एक दिन **मैंने** डॉक्टर गोलीवाला की दीवार पर भैंस का चित्र बनाया था। **उन्होंने** माँ से मेरी शिकायत कर दी।"

चाचा : "अच्छा ! तो यह बात है।"

रामू : चाचाजी ! **आप** चित्रकार कैसे बन गये ?

इस वार्तालाप में रामू के स्थान पर मैं, तुम, मैंने, और डॉक्टर गोलीवाला के स्थान पर 'उन्होंने' तथा चाचाजी के स्थान पर 'आप' प्रयुक्त हुए हैं, जो कि 'सर्वनाम' शब्द हैं। इस प्रकार संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होनेवाले शब्द '**सर्वनाम**' कहलाते हैं।

पढ़िए और समझिए

(1) **आप** कहाँ जा रहे हैं ?

(2) दाल में **कुछ** पड़ा हुआ है।

(3) चलो **हम** स्कूल चलें।

(4) **मैं** तो बहुत प्रतिभाशाली हूँ।

(5) आओ, **हम** नदी-पहाड़ खेलेंगे।

(6) **उसे** तो बस हँसना आता है।

(7) तुम्हें **मेरी** कविताएँ अच्छी लगीं ?

(8) **वह** अपने आप खड़ा होने लगा है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द '**सर्वनाम**' हैं। वाक्यों में इन शब्दों का उपयोग संज्ञा के बदले हुआ है।

सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होनेवाले शब्द :

मैं, हम, मेरा, हमारा, मुझे, हमें, मुझमें, मुझसे, मेरे लिए, हमसे, हमारे लिए

तू, तुम, तुम्हारा, आप, आपका, आपसे, आपको, तुम्हें, तुम्हारी, तुम्हारे, तेरे, तुझे

वह, वे, उसे, उनका, उन्हें, उनसे, उसकी, उसका, उससे, उनकी, उनके

यह, ये, इसे, इसको, इन्हें, इनका, इनसे, इनके लिए

कौन, किसने, कुछ, कोई, किसी, कब, कैसे, किसको, किससे, क्या

जैसा, वैसा, स्वयं, आप, खुद, स्वतः

इतना जानिए

कुछ संयुक्ताक्षर ऐसे हैं जिनका विश्लेषण हम कभी–कभार गलत करते हैं। जैसे 'सिद्ध' में 'द्' और 'ध' जुड़े हुए हैं। फिर भी हम दुहरा 'ध्ध' समझते हैं। ऐसी गलती दूर करने, शुद्ध उच्चारण एवं शुद्धलेखन हेतु यहाँ ऐसे संयुक्ताक्षर दिए गए हैं, जिनका अध्ययन कीजिए।

उदाहरण के अनुसार अन्य शब्द अपनी किताब में से ढूँढ़कर लिखिए :

क् + ष = क्ष – कक्षा, क्षमा	श् + र = श्र – श्रवण, श्रेष्ठ
ज् + ञ = ज्ञ – ज्ञान, विज्ञान	त् + र = त्र – त्रस्त, त्रिभुज
क् + र = क्र – क्रम, क्रिया	ट् + र = ट्र – राष्ट्र, ट्रक
द् + व = द्व – विद्वान, द्वार	द् + ध = द्ध – युद्ध, प्रसिद्ध
द् + द = द्द – तद्दन, राजगद्दी	द् + म = द्म – पद्म, छद्म
ह् + य = ह्य – बाह्य, सह्य	ह् + ऋ = हृ – हृदय, अपहृत
क + र + म = – कर्म	क + र + म = – कर्म
श् + च = श्च – आश्चर्य, पश्चात्	ध + र + म = – धर्म

योग्यता–विस्तार

- पुस्तकालय में जाकर पंचतंत्र या हितोपदेश की अन्य कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।
- छात्रों को ऐसी अन्य कहानियाँ सुनाकर कक्षा में उनका नाट्यीकरण करवाइए।